अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान वर्ष : 2019 **दिनांक : 17-8-2019**

समय : 3 घंटा **पंचम वर्ष - प्रथम-प्रश्न पत्र** **पूर्णांक : 100**

संजया–25

प्र. 1 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें– 10

(क) छेदोपस्थापनीय चारित्र–प्रव्रज्या द्वार।

(ख) सूक्ष्म संपराय चारित्र–उपसंपद्हान द्वार।

(ग) परिहार विशुद्धि चारित्र–आकर्ष द्वार।

(घ) छेदोपस्थापनीय चारित्र–काल द्वार।

(ङ) सामायिक चारित्र–गति स्थिति पदवी द्वार।

(च) छेदोपस्थापनीय चारित्र–अंतर द्वार।

प्र. 2 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 6

(क) कल्पातीत कौन से गुणस्थान में होते हैं?

(ख) संयम स्थान किसे कहते हैं?

(ग) अतीर्थी किसे कहते हैं?

(घ) वेदनीय कर्म की उदीरणा किस स्थिति में नहीं होती?

(ङ) पांच कर्मों की उदीरणा किन गुणस्थानों में होती है?

(च) चारित्र चला जाए तो उत्कृष्ट कितने समय का अंतर पड़ सकता है?

(छ) यथाख्यात चारित्र में अनाहारक की स्थिति कब बनती है?

(ज) परिहार विशुद्धि चारित्र में 29 वर्ष कम का क्या तात्पर्य है?

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) सूक्ष्म संपराय चारित्र में जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह मास का अंतर किस अपेक्षा से है?

(ख) पांचों चारित्र में अल्प बहुत्व का क्रम क्या है?

(ग) स्थिति द्वार-सामायिक चारित्र की जघन्य स्थिति एक समय किस अपेक्षा से ली गई है?

(घ) छेदोपस्थापनीय चारित्र गुरुमुख से स्वीकार किया जाता है, तब उसमें पांचों लिंग कैसे लिए गए हैं?

(ङ) छेदोपस्थापनीय चारित्र में अनेक जीवों की अपेक्षा उत्कृष्ट अंतर कितना व किस अपेक्षा से है?

नियंठा–25

प्र. 4 किन्हीं सात प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 7

(क) 'अचरम समय का निर्ग्रन्थ' से क्या तात्पर्य है?

(ख) पुलाक का समुद्घात द्वार लिखें।

(ग) दो कर्मों की उदीरणा हो तो कौन से कर्मों की होती है?

(घ) पुलाक का कालमान कितना है?

(ङ) स्नातक की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहुर्त किस अपेक्षा से ली गई है?

(च) बकुश के कितने व कौन से कर्मों की उदीरणा होती है?

(छ) निर्ग्रन्थ के जघन्य व उत्कृष्ट कितने भव हो सकते हैं?

(ज) प्रतिसेवना निर्ग्रन्थ में कितनी लेश्या कही गई है?

(झ) निर्ग्रन्थ के कितने कर्मों का वेदन होता है?

प्र. 5 कोई छह द्वार लिखें– 18

(क) पुलाक–गति पदवी स्थिति।

(ख) कषाय कुशील–कर्म उदीरणा द्वार।

(ग) प्रतिसेवना–प्रवज्या द्वार।

(घ) पुलाक–अंतर द्वार।

(ङ) कषाय कुशील–आकर्ष द्वार।

(च) बकुश–परिणाम-स्थिति।

(छ) पुलाक–काल द्वार।

(ज) प्रतिसेवना–सन्निकर्ष द्वार।

गीतिका–नियंठा-दिग्दर्शन–10

प्र. 6 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) निर्ग्रंथ व स्नातक कौन से चावलों की भांति होते हैं?

(ख) कषाय कुशील निर्ग्रंथ किन गुणस्थानों में होते हैं?

(ग) कोई मूर्ख छद्मस्थ की कमी को देखकर क्यों अधीर हो जाता है?

प्र. 7 कोई दो पद्यों को भावार्थ सहित लिखें– 8

(क) निर्ग्रंथ ग्यारमें.....जोय।

(ख) हय रूप.....जोय।

(ग) सम्यक्त.....बातां सोय।

(घ) माषी.....थी जोय।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–40

प्र. 8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें–

पच्चीस बोल–

(क) संवर तत्त्व–8 से 18 भेद तक **अथवा** अंक 21का भांगा 9 का (ग) पार्ट 3

(ख) पच्चीस बोल की चतुर्भंगी–निर्जरा **अथवा** सतरहवां बोल। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–सोलह दण्डक से इक्कीस तक **अथवा** बीसवां बोल। 3

(घ) तत्त्वचर्चा–कर्म पर छह द्रव्य, नौ तत्त्व **अथवा** पुण्य धर्म आदि एक या दो। 3

(ङ) कर्म प्रकृति–प्रत्येक प्रकृति–अंतिम चार व्याख्या सहित **अथवा** स्थावर दशक। 4
अंतिम पांच व्याख्या सहित–

(च) जैन तत्त्व प्रवेश–दृष्टांत द्वार–बंध के बाद जो प्रश्न व उत्तर है वह लिखें **अथवा** दृष्टांत द्वार–आश्रव की व्याख्या करें। 4

(छ) जैन तत्त्व प्रवेश–व्रताव्रत द्वार–चारित्र के अधिकारी निर्ग्रंथ.....से प्रारंभ कर प्रथम दोहा 'साध नै श्रावक.....कानी रे' तक **अथवा** पारमार्थिक दान के दोहे। 4

(ज) इक्कीस द्वार–सम्यक मिथ्या दृष्टि **अथवा** असंज्ञी का पूरा द्वार लिखें। 4

(झ) बावन बोल–उदय के तैंतीस बोल में कौन-कौन आत्मा **अथवा** जीव पारिणामिक के दस भेद कितने भाव? कितनी आत्मा? 4

(ञ) लघु दण्डक–दृष्टि द्वार **अथवा** दर्शन द्वार। 4

(ट) लघु दण्डक–संहनन द्वार **अथवा** वेद द्वार।

(ठ) पांच ज्ञान–वर्धमान अवधिज्ञान **अथवा** प्रतिबोधक दृष्टांत लिखें। 4